ईश्वर-परम शिक्षक के रूप में

ब्र.कु.सूर्य...

''भगवान स्वयं बैठकर कहीं पढ़ाता होगा'' - यह बात सुनकर विद्वान तो अवश्य ही चौकन्ने होंगे, परन्तु ''भगवान ने कभी ज्ञान दिया था'' - यह बात वे सहज ही स्वीकार कर लेंगे। जरा अन्तर्मुखी होकर सोचो - जहां भगवान के द्वारा ज्ञान की बरसात होती हो, उन मनुष्यों की जीवन रूपी खेती में कितनी बहार होगी, उनकी सत्य की खोज समाप्त हो गई होगी, उनका मन ज्ञान-रत्नों से भरपूर हुआ अतीन्द्रिय सुखों में नृत्य करता होगा, उनका तीसरा दिव्य नेत्र खुल चुका होगा। ईश्वर को ईश्वर द्वारा जानकर और सृष्टि चक्र को परमपिता द्वारा जानकर वे आत्माएं भी ज्ञान का मानो साकार रूप ही बन गई होंगी। जिन्होंने उनके मुख से सत्य ज्ञान-वादन सुना है, जिन्होंने उनके सत्य कर्म देखे हैं, जिन्होंने उनकी पावन दृष्टि से अशरीरी स्थिति का दिव्य अनुभव किया है, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि ब्रह्माकुमार, कुमारियों को ज्ञान देने वाला कोई देहधारी मनुष्य नहीं है, बल्कि स्वयं ज्योति स्वरूप ईश्वर है।

सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न वर्गों के लाखों लोगों ने ज्ञान सागर की ज्ञान की तरंगें सम्मुख बैठकर सुनी हैं। उनमें वैज्ञानिक भी हैं और शिक्षा शास्त्री भी, उनमें वेदवादी भी हैं और पंडित भी, उनमें अनेक वकील भी हैं व इंजीनियर भी, उनमें लेखक भी हैं व अनेक पत्रकार भी, उनमें राजनीतिज्ञ भी हैं और व्यापारी भी, उनमें नास्तिक भी हैं व आस्तिक भी, हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और हिन्दू धर्म के विभिन्न मतों के अनुयायी भी। और उन्होंने अपने अनुभव से, वहां के पवित्र वातावरण से व परम शांति के वाइब्रेशन्स से यह दृढ़ निश्चय किया है कि स्वयं ईश्वर ही साधारण तन में बैठकर ज्ञान दे रहे हैं। उस ज्ञान को सुनकर उन्हें अपना पूर्ववत् ज्ञान फीका लगने लगा और उन्होंने इस सत्य को जानकर अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में लगाने का संकल्प किया। जिन्होंने भी उनकी प्रेम से भरपूर मधुर वाणी सुनी उन्हें अवश्य एहसास हुआ कि ये कोई और नहीं, उनका अपना ही परम पिता है.. उनकी प्रभु मिलन की इच्छा शांत हो गई और उन्हें पूर्ण संतोष हुआ कि उन्होंने सम्पूर्ण सत्य को जान लिया है। विश्व की स्टेज पर ईश्वर की अनुपम दिव्य लीला चल रही है, परन्तु कोटि-कोटि लोग उससे अनभिज्ञ हैं।

परमात्मा कब पढ़ाते हैं - परमात्मा को धरा पर आकर पढ़ाने की आवश्यकता है या वह प्रेरणा से ही सत्य का रहस्योद्घाटन कर सकता है। यद्यपि वह सब कुछ कर सकता है, परन्तु हमें तो यह देखना है कि उसने पूर्व कल्प में क्या-क्या किया था। लोग कहते हैं कि वह सर्वशक्तिवान है तो उसे आने की क्या जरूरत? प्रश्न सत्य प्रतीत होता है - परन्तु हम पूछते हैं कि वह सर्वशक्तिवान है तो वह पूर्व काल में आया क्यों था? परन्तु यह उन लोगों का प्रश्न है जो भगवान को उनके सत्य स्वरूप में नहीं जानते।

बात केवल ज्ञान देने की ही नहीं, परन्तु उन्हें तो उन अनेक आत्माओं से मिलना भी है जो उन्हें कई जन्मों से बुलाते आ रहे हैं। आत्माओं का मिलन परमात्मा से अवश्य होता है। क्योंकि यदि यह मिलन न होता तो किसी को भी परमात्मा से मिलने की इच्छा न होती। वह मिलन अवश्य कल्पातीत परमानन्दों को देने वाला रहा होगा, तब ही तो उस मिलन के लिए मनुष्य अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार है।

यदि वह मात्र प्रेरणा से ही सब कुछ करता तो उसके दिव्य कर्मों का गायन क्यों होता। और भला उसकी पवित्र प्रेरणाओं को कौन ग्रहण करता क्योंकि अब इस धरा पर कोई भी सम्पूर्ण पावन तो है नहीं। तो...

- परमात्मा कलियुग के अन्त में उस समय ज्ञान देने आते हैं जब चारों ओर अज्ञान का अंधकार छा जाता है। जब लोग अज्ञान को ही ज्ञान समझने लगते हैं।

- जब शास्त्रों में ज्ञान खोज-खोजकर मनुष्य सत्य तक नहीं पहुंच पाते।

- जब शास्त्रवादी भी शास्त्र-धर्म को छोड़ देते हैं।

- जब सम्पूर्ण सृष्टि पर काम का साम्राज्य छा जाता है और काम ही जीवन है - इस मंत्र से मनुष्य की बुद्धि सम्पूर्ण कलुषित हो जाती है।

- जब सत्य की हार व असत्य की जीत होने लगती है।

- जब विद्वान और गुरु सभी कौरव पक्ष में चले जाते हैं अर्थात् अधर्म के सहयोगी बन जाते हैं।

- जब सत्य धर्म लोप हो जाता है अर्थात् धर्म निर्बल हो जाता है।

- जब विश्व विनाश के कगार पर जा खड़ा होता है।

- जब मानव से मानवता पूर्णतया नष्ट होने पर पहुंच जाती है।

- जब पूर्व काल में भी ईश्वर ने ज्ञान दिया, तब भी वेद शास्त्र उपस्थित थे, धर्म गुरु भी वहीं थे। अब भी वही समय है।

परमात्मा कैसे पढ़ाते हैं? - अशरीरी परमात्मा ने ज्ञान प्रजापिता ब्रह्मा के मनुष्य तन द्वारा दिया। और उस ज्ञान को धारण करके प्रजापिता ब्रह्मा सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप को प्राप्त हुए। परमात्मा ने ज्ञान किसी एक मनुष्य को नहीं दिया जो उसने फिर अन्यों को दिया हो, नहीं। परमात्मा सैकड़ों को एक ही साथ बैठकर शिक्षक के रूप में पढ़ाते हैं और सभी सम्मुख बैठे हुए उनकी उपस्थिति का स्पष्ट अनुभव करते हैं।

परमात्मा शास्त्रों का ज्ञान नहीं देते - लोग प्रश्न करते हैं कि आपका ये ज्ञान कहां से आया? ये बातें शास्त्रों में तो लिखी नहीं, किसी महान् विद्वान ने तो ऐसा कहा नहीं, और इसलिए वे इसे कल्पना समझकर इस पर चिंतन ही नहीं करते। परन्तु प्यारे बन्धुओ! यदि भगवान भी आकर शास्त्र ही सुनावे, तो उसके आने का प्रयोजन ही क्या? यदि वह भी आकर वही ज्ञान देवे तो उसे ज्ञान का सागर कौन कहेगा!! फिर वेदों पर ही आधारित तो भारत में भी अनेक सम्प्रदाय हैं, वह किसका ज्ञान दे...। जिन्होंने उस ज्ञान के सागर को ज्ञान देते हुए देखा है और उसका गहनता से चिंतन व अनुभव किया है, वे जानते हैं कि उन्होंने शास्त्र पढ़कर ज्ञान नहीं दिया। बल्कि गीता में कही गई बात को पुन: याद दिलाई कि ''इन वेद, शास्त्र, यज्ञ, तप, दान-पुण्य से कोई भी मुझे नहीं प्राप्त कर सकता।'' और यह सिद्ध करके दिखाया कि शास्त्रों में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। यदि शास्त्रों में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो संसार का पतन न होता।

ईश्वर प्रदत्त ज्ञान ही सम्पूर्ण व सर्व धर्मावलम्बियों के लिए मान्य - यों तो प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने-अपने ज्ञान के सम्पूर्ण सत्य ही मानते हैं। वेद-वादी भी वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान की पुस्तकें मानते हैं, परन्तु निष्पक्ष रूप से चिंतन करने पर सबका दर्शन उलझा हुआ व अपूर्ण ही दिखाई देता है। ''सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्य को सम्पूर्ण बनाता है'' - यही सम्पूर्ण ज्ञान होने का प्रमाण है। परन्तु कोई भी दर्शन सभी प्रश्नों का सरल समाधान नहीं देता, खोजें जारी हैं, लोग एक दर्शन छोड़कर दूसरे पर जाते हैं, परन्तु प्यास ज्यों की त्यों बनी हुई है।

ईश्वर द्वारा दिया ज्ञान सम्पूर्ण, उसको लेने वाले सम्पूर्णता की ओर चल पड़ें हैं, उन्होंने विकारों का त्याग प्रारम्भ कर दिया है, उनके कर्मों में श्रेष्ठता आने लगी है। उस ज्ञान में धर्म का भेद-भाव नहीं, बाह्य आडम्बर, कर्म-काण्ड, हवन, पूजन भी नहीं। उनके ज्ञान में ऐसे सिद्धांत हैं, जिनका पालन प्रत्येक धर्मावलम्बी खुशी से करके अपने लक्ष्य को पा सकता है।

परमात्मा ही सम्पूर्ण योग सिखाते हैं - आज तक प्रचलित किसी भी योग द्वारा न तो मनुष्य आत्मिक स्वरूप में ही स्थित होता है और न ही उसका सम्बन्ध परमात्मा से जुटता। यद्यपि ऋषियों ने भी आत्मा व परमात्मा के मिलन को ही योग कहा परन्तु वह मिलन कैसे हो - यह स्पष्ट नहीं हो सका।

परन्तु स्वयं परमात्मा सत्य राजयोग सिखाते हैं। इसी योग को बल कहा है, क्योंकि इससे ही आत्मा को सर्व शक्तिवान से शक्ति प्राप्त होती है और मनुष्य सहज भाव से निर्विकारी बन जाता है। सम्पूर्ण योग तो केवल सम्पूर्ण परमात्मा ही सिखाते हैं, कोई भी अपूर्ण मनुष्य नहीं।

ईश्वर द्वारा ही ईश्वर को जाना जा सकता है - विद्वानों से पूछा - आप भगवान को जानते हो? उत्तर मिला - जान रहे हैं। आप भगवान को मिले हैं? उत्तर मिला - प्रयास जारी है। ये उन स्पष्ट वक्ता विद्वानों के उत्तर हैं जो निरंहकारी हैं व अपनी अप्राप्ति को सहर्ष स्वीकार करते हैं।

उनका उत्तर सत्य है क्योंकि ''ईश्वर को ईश्वर द्वारा ही जाना जा सकता है।'' उस द्वारा उसका ज्ञान सुनकर हमने उसे जाना है व पाया है। इसमें न तर्क की बात है, न अनुमान है। विद्वान अवश्य सोचते होंगे कि ये ब्रह्मा-वत्स कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। परन्तु ये मात्र बातें ही नहीं, उनकी अमूल्य प्राप्तियां हैं, जो उनकी जन्म-जन्म की तपस्या का फल है।

सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष का बीज होने के

श्रीरामपूर। ढोक महाराज को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंदा।

व्यारा (तापी)। कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़ें हैं डॉ.कनुभाई देसाई, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.मंजुला, ब्र.कु.अरूणा तथा अन्य।

यमुनानगर। ए.डी.सी.गीता भारती को 'प्लेटिनम जुबली' का संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रमेश, ब्र.कु.ज्योति, ब्र.कु.भारत भूषण।

ओसियां (जोधपुर)। 'अमृत महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए सरपंच खुशालाराम, उप सरपंच कैलाश सिंह, ब्र.कु.फूल, ब्र.कु.केशील, ब्र.कु.अविनाश तथा अन्य।

वडोदरा, मंगलवाड़ी। 'अमृत महोत्सव' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मंत्री जीतु भाई सुखडीया, हरीश वैद्य, ब्र.कु.निरंजना, ब्र.कु.रामगोपाल तथा अन्य।

बाड़ी (धौलपुर)। 'आत्म जागृति प्रभु संदेश अभियान' का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं नगरपालिका अध्यक्ष गयाप्रसाद, ब्र.कु.अशोक गावा एवं ब्र.कु.अम्बिका।